दैनिक सवेरा टाइम्स
अंधेरे से उजाले की ओर...

अब सिर्फ परीक्षा के अंक नहीं, छात्रों के संस्कार और कौशल भी तय करेंगे भविष्य

प्रदेश में बदलेगी मूल्यांकन व्यवस्था, हिमाचल स्कूल शिक्षा बोर्ड जल्द लागू करेगा डिजिटल समग्र प्रगति पत्र

सवेरा न्यूज/यशपाल सिंह

धर्मशाला, 7 अगस्त : हिमाचल प्रदेश में स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बड़ा बदलाव होने जा रहा है। अब विद्यार्थियों का मूल्यांकन केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर नहीं होगा, बल्कि उनकी रचनात्मक क्षमता, जीवन कौशल, नैतिक मूल्यों, संचार क्षमता और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में प्रदर्शन भी उनकी प्रगति का अहम आधार बनेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड जल्द ही प्रदेशभर के स्कूलों में डिजिटल समग्र प्रगति पत्र लागू करने की तैयारी कर रहा है। इस नई व्यवस्था को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षा बोर्ड का एक प्रतिनिधिमंडल गुजरात के गांधीनगर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में शामिल होकर लौटा है। बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा ने बताया कि प्रतिनिधिमंडल ने देश के विभिन्न शिक्षा बोर्डों द्वारा अपनाई जा रही नई मूल्यांकन प्रणालियों, दक्षताधारित शिक्षा और शिक्षकों के प्रशिक्षण से जुड़े नवाचारों का विस्तृत अध्ययन किया। इन अनुभवों का उपयोग अब हिमाचल की शिक्षा व्यवस्था को और अधिक आधुनिक तथा छात्र-केंद्रित बनाने में किया जाएगा।

हर छात्र का 360 डिग्री मूल्यांकन

बोर्ड अध्यक्ष ने बताया कि डिजिटल समग्र प्रगति पत्र विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का दस्तावेज होगा। इसमें केवल विषयों के अंक ही नहीं, बल्कि रचनात्मक सोच, तार्किक क्षमता, संवाद कौशल, व्यवहार, जीवन कौशल, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों और अन्य प्रतिभाओं का भी समग्र मूल्यांकन किया जाएगा। इससे विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमता और सीखने की प्रगति का व्यापक आकलन संभव हो सकेगा।

इस नई प्रणाली से विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को अधिक पारदर्शी, विश्वसनीय और व्यापक मूल्यांकन व्यवस्था मिलेगी। इससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों को प्रभावी रूप से लागू करने के साथ- साथ प्रदेश की स्कूली शिक्षा को तकनीक आधारित, गुणवत्तापूर्ण और पूरी तरह छात्र-केंद्रित बनाने में नई दिशा मिलेगी।

(डा. राजेश शर्मा, चेयरमैन, हिमाचल स्कूल शिक्षा बोर्ड)

Sat, 08 August 2026
epaper.dainiksaveratimes.in/c/80642573

पंजाब केसरी
SAT,08 AUGUST 2026
EDITION: HIMACHAL NEWPAGE

हिमाचल के स्कूलों में बदलेगा परीक्षा परिणाम का पैटर्न

धर्मशाला, 7 अगस्त (ब्यूरो): राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत हिमाचल प्रदेश के स्कूलों में छात्रों के मूल्यांकन का तरीका बदलने जा रहा है, जहां केवल परीक्षा के अंकों की बजाय अब उनकी रचनात्मकता, जीवन कौशल और नैतिक मूल्यों के आधार पर 360 डिग्री समग्र आकलन किया जाएगा। इसके लिए हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड जल्द ही डिजिटल होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड लागू करने जा रहा है।

बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा ने बताया कि देशभर के अन्य बोर्ड्स की सर्वश्रेष्ठ कार्यप्रणालियां और डिजिटल मूल्यांकन प्रणाली को सीखने के लिए अतिरिक्त सचिव डॉ. अंबिका जोशी, सहायक सचिव विपन कुमार और शैक्षणिक अधिकारी डिम्पल कंवर का एक प्रतिनिधिमंडल गुजरात के गांधीनगर में आयोजित 2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यक्रम में भाग लेकर लौटा है। इस नई व्यवस्था से प्रदेश के विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को एक पारदर्शी, व्यापक और प्रौद्योगिकी-सक्षम छात्र-केंद्रित मूल्यांकन प्रणाली मिलेगी।

Himachal Dastak Dt.08-08-2026

डिजिटल होलिस्टिक कार्ड से होगा छात्रों का मूल्यांकन

हिमाचल दस्तक ▌धर्मशाला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत हिमाचल प्रदेश के स्कूली छात्रों का मूल्यांकन केवल परीक्षा के अंकों से नहीं, बल्कि रचनात्मकता, जीवन कौशल और नैतिक मूल्यों के आधार पर भी उनकी प्रतिभा को आंका जाएगा। इसके लिए हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड राज्य में जल्द ही डिजिटल होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड लागू करने जा रहा है। इस नई मूल्यांकन प्रणाली की बारीकियां और देशभर के अन्य बोर्ड की सर्वश्रेष्ठ कार्यप्रणालियां सीखने के लिए बोर्ड का एक विशेष प्रतिनिधिमंडल गुजरात के गांधीनगर से दो दिवसीय गहन मंथन कर वापस लौटा है। हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ.

राजेश शर्मा ने बताया कि शिक्षा बोर्ड के एक प्रतिनिधिमंडल ने गांधीनगर (गुजरात) स्थित स्कूल ऑफ अचीवर्स में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया। डिजिटल होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान और परीक्षा परिणामों तक सीमित रखने वाली व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह उनके 360 डिग्री समग्र विकास को मापने का एक प्रभावी टूल है।

Dainik Jagran Dt.08-08-2026

अब अंकों से नहीं, प्रतिभा से होगी छात्रों की परख

जागरण संवाददाता, धर्मशाला : राष्ट्रीय शिक्षा नीति एनईपी-2020 के तहत हिमाचल प्रदेश के स्कूली छात्रों के मूल्यांकन का तरीका अब पूरी तरह से बदलने जा रहा है। केवल परीक्षा के अंकों के आधार पर नहीं, बल्कि अब छात्रों की रचनात्मकता, जीवन कौशल और नैतिक मूल्यों के आधार पर भी उनकी प्रतिभा को आंका जाएगा। इसके लिए हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड राज्य में जल्द ही 'डिजिटल होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड' लागू करने जा रहा है। इस नई मूल्यांकन प्रणाली की बारीकियां और देश भर के अन्य बोर्ड्स की सर्वश्रेष्ठ कार्यप्रणालियां सीखने के लिए बोर्ड का एक विशेष प्रतिनिधिमंडल गुजरात के गांधीनगर से सफल मंथन कर वापस लौटा है।

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डा. राजेश शर्मा ने बताया कि शिक्षा बोर्ड के एक प्रतिनिधिमंडल ने गांधीनगर (गुजरात) स्थित स्कूल आफ अचीवर्स में आयोजित दो दिवसीय "इंटर बोर्ड लर्निंग एक्सपोजिशन ऑन डिजिटल होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड अंडर एनईपी 2020" कार्यक्रम में भाग लिया।

इस दल में अतिरिक्त सचिव डा. अंबिका जोशी, सहायक सचिव विपिन कुमार और शैक्षणिक अधिकारी हिमाल कंवर शामिल थे। हिमाचल के दल ने देश के विभिन्न शिक्षा बोर्डों द्वारा विकसित किए जा रहे डिजिटल मूल्यांकन, दक्षता आधारित सिस्टम और शिक्षकों की क्षमता निर्माण से जुड़े नवाचारों का अध्ययन किया व अपने अनुभव भी साझा किए।

यह है 360 डिग्री समग्र मूल्यांकन

डा. राजेश शर्मा ने स्पष्ट किया कि 'डिजिटल होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड' विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान और परीक्षा परिणामों तक सीमित रखने वाली व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह उनके 360 डिग्री समग्र विकास को मापने का एक प्रभावी टूल है। इसके माध्यम से बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ उनके कौशल, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, संचार क्षमता, जीवन कौशल और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का सटीक और व्यापक आकलन किया जाएगा। इससे यह समझने में आसानी होगी कि बच्चे ने वास्तविक रूप से क्या और कितना सीखा है।

गुणवत्ता में आएगा बदलाव

इस राष्ट्रीय कार्यक्रम से सीखी सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों को अब हिमाचल प्रदेश के स्कूलों में लागू किया जाएगा। बोर्ड अध्यक्ष ने विश्वास जताया कि राज्य में डिजिटल होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड लागू होने से विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को एक पारदर्शी, व्यापक और अत्यधिक विश्वसनीय मूल्यांकन प्रणाली मिलेगी। यह नई पहल प्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों को धरातल पर उतारने और स्कूली शिक्षा को पूरी तरह से छात्र-केंद्रित व प्रौद्योगिकी-सक्षम करने में एक मील का पत्थर साबित होगी।

आइआइटी दिल्ली में तकनीकी शिक्षा का लिया अनुभव

राज्य ब्यूरो, जागरण • शिमला : तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी ने आइआइटी दिल्ली के शैक्षणिक भ्रमण पर गए हिमाचल प्रदेश के विद्यार्थियों से आनलाइन संवाद कर उनके अनुभव जाने व उत्साहवर्धन किया। उन्होंने विद्यार्थियों से आधुनिक तकनीक को समझने, नवाचार व अनुसंधान के प्रति रुचि विकसित करने तथा इस प्रकार का अधिकतम लाभ उठाने का आह्वान किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों को सेमीकंडक्टर टेक्नोलॉजी, फैब्रिकेशन लैब, वेफर स्केल इंटीग्रेशन, चिप डिजाइन, निर्माण प्रक्रिया व अन्य उभरती तकनीक का व्यावहारिक ज्ञान देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। संवाद के दौरान मंत्री ने विद्यार्थियों से आइआइटी दिल्ली में आयोजित तकनीकी सत्र, विशेषज्ञों के साथ हुई चर्चा और भ्रमण से प्राप्त अनुभवों की जानकारी ली। तकनीकी शिक्षा निदेशक रोहित राठौर ने भी विद्यार्थियों को विभिन्न तकनीकी सत्रों और उन्नत प्रयोगशालाओं का पूरा लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

AUGUST 8, 2026 SATURDAY

DHARAMSHALA

The Sunny Times

THE ULTIMATE REPORT CARD: HPBOSE UNVEILS TECH-POWERED HOLISTIC STUDENT EVALS

Sunny Mahajan | Dharamshala

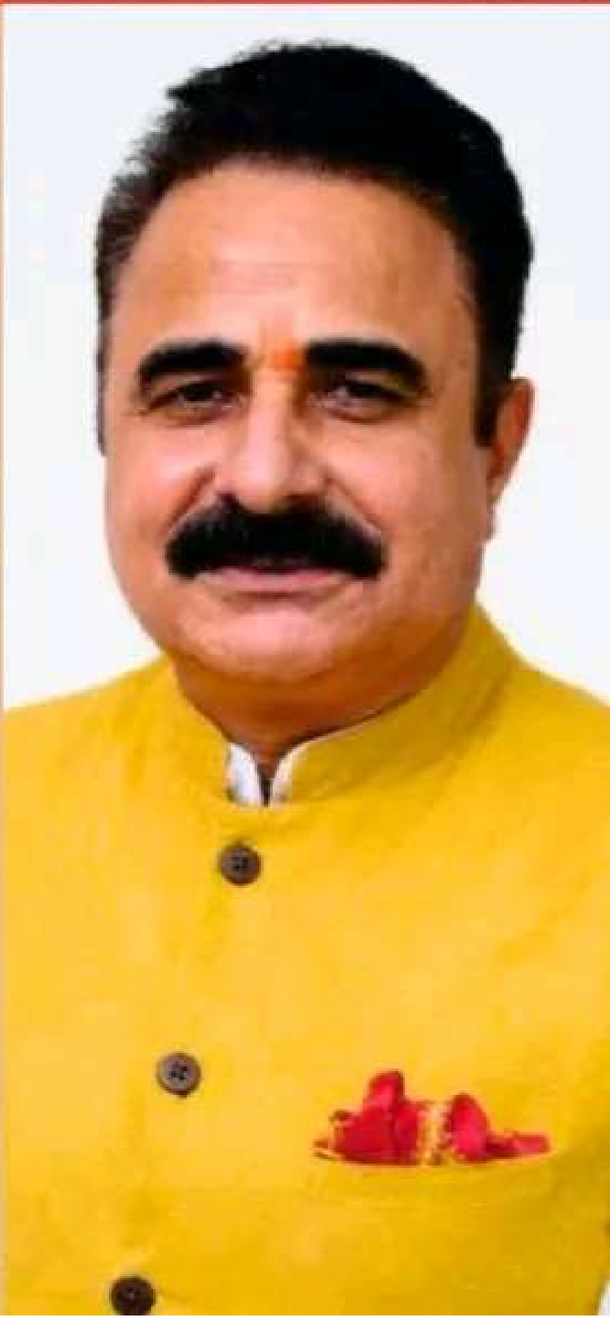

The era of mindless rote learning is officially coming to an end in Himachal Pradesh. In a massive overhaul of the state's education system under the National Education Policy (NEP) 2020, the Himachal Pradesh Board of School Education (HPBOSE) is set to scrap traditional, marks-obsessed report cards. Instead, schools will soon judge students on their true overall potential, shifting the spotlight to their creativity, moral values, and real-world life skills rather than just their exam scores.

The driving force behind this transformation is the upcoming launch of the 'Digital Holistic Progress Card'. To ensure a flawless rollout, a high-level HPBOSE delegation recently returned to Dharamshala following a two-day intensive brainstorming summit in Gandhinagar, Gujarat. Led by Board Chairman Dr. Rajesh Sharma, the team—including key officials Dr. Ambika Joshi, Vipan Kumar, and Dimple Kanwar—studied top-tier competency-based evaluation models and digital innovations developed by educational boards across the country, while also sharing their own regional insights.

This new digital card promises a radical shift in how student success is measured. Dr. Sharma emphasized that the 360-degree evaluation strips away the outdated reliance on textbook knowledge and high-stakes testing. Instead, it acts as a dynamic tool to track a child's complete evolution. The system will meticulously assess their critical thinking, communication prowess, and co-curricular achievements. The ultimate goal is to paint a highly accurate picture of what a student has genuinely learned and understood, rather than what they simply managed to memorize the night before a test.

By bringing these national best practices back to Himachal Pradesh, the education board is gearing up to drastically elevate the state's quality of learning. This sweeping change promises to equip parents, teachers, and students with a highly transparent, reliable, and tech-powered evaluation system. It stands as a crucial milestone in bringing the core vision of NEP-2020 to life, guaranteeing a vibrant education system that is fully student-centric and built to prepare the next generation for the modern world.